आज के भारतीय लोकतंत्र के समक्ष चुनौतियाँ

अनिता तंवर, एसोसिएट प्रोफेसर
राजनीति विज्ञान विभाग
गवर्नमेंट कॉलेज, कृष्ण नगर, जिला। महेंद्रगढ़ (हरियाणा)

सारांश

भारतीय राजनीतिक प्रणाली एक लोकतांत्रिक ढांचा है जो ब्रिटिश वेस्टमिंस्टर मॉडल से प्रेरित है। इसमें एक राज्य प्रमुख के रूप में राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री के नेतृत्व में कार्यकारी शाखा, द्विसदनीय संसद (राज्यसभा और लोकसभा) और एक स्वतंत्र न्यायपालिका शामिल हैं, जिसका नेतृत्व सर्वोच्च न्यायालय करता है। लोकसभा के सदस्य हर पाँच साल में प्रत्यक्ष चुनाव के माध्यम से चुने जाते हैं, जबकि राज्यसभा के सदस्य छह साल की अवधि के लिए अप्रत्यक्ष रूप से राज्य विधानसभाओं द्वारा चुने जाते हैं। भारतीय संविधान देश की संघीय संरचना, सरकार की शक्तियों और नागरिकों के मौलिक अधिकारों को निर्धारित करता है, जिसमें कानून के समक्ष समानता, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, सभा करने का अधिकार और आंदोलन का अधिकार शामिल हैं।

भारतीय जाति व्यवस्था का राजनीति पर गहरा प्रभाव है, हालांकि संविधान में जातिगत भेदभाव पर प्रतिबंध लगाया गया है और नौकरियों तथा शिक्षा में समान अवसर प्रदान करने के लिए आरक्षण नीति बनाई गई है। इसके बावजूद, जाति राजनीति में प्रासंगिक बनी हुई है, और कुछ दल सामूहिक रूप से मतदान करने वाले जाति समूहों के समर्थन को प्राथमिकता देते हैं।

1975 में आपातकाल के दौरान भारत को संविधान में धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र के रूप में वर्णित किया गया, लेकिन भारत एक गहन धार्मिक विविधता वाला देश है। संविधान धार्मिक उत्पीड़न को निषिद्ध करता है, लेकिन यह अमेरिका के संविधान की तरह धर्म और राज्य को स्पष्ट रूप से अलग नहीं करता। राजनीति में धर्म की महत्त्वपूर्ण भूमिका है और नेता अक्सर जाति या धार्मिक पहचान के आधार पर समर्थन प्राप्त करने का प्रयास करते हैं। पिछली एक शताब्दी से हिंदू राष्ट्रवादियों ने भारत को एक हिंदू मातृभूमि के रूप में पुनर्परिभाषित करने का समर्थन किया है।

मुख्यशब्द :लोकतंत्र, नागरिक समाज, प्रेस स्वतंत्रता, धार्मिक विभाजन, भाजपा, विपक्ष, आर्थिक चुनौतियाँ, संवैधानिक मूल्य, जनता की भागीदारी

स्वतंत्रता के बाद भारत में लोकतंत्र का विकास

भारत का लोकतांत्रिक सफर 1947 में ब्रिटिश शासन से स्वतंत्रता प्राप्त करने के साथ शुरू हुआ। स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद देश के सामने एक विशाल जनसंख्या को एकजुट करने की चुनौती थी, जो विभिन्न क्षेत्रों में फैली थी और सैकड़ों भाषाएँ बोलती थी। इस पृष्ठभूमि में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी, जिसे 'कांग्रेस' के रूप में जाना जाता है, एक प्रमुख राजनीतिक शक्ति के रूप में उभरी। कांग्रेस ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी, और इसके साथ राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी का नाम जुड़ा होने के कारण इस पार्टी को विशेष सम्मान और समर्थन मिला।

राजीव गाँधी का नेतृत्व और गठबंधन सरकारों का दौर

1984 में इंदिरा गाँधी की हत्या के बाद उनके पुत्र राजीव गाँधी ने 1985 के चुनाव में कांग्रेस पार्टी को जीत दिलाई। लेकिन यह जीत कांग्रेस के पुराने वर्चस्व की वापसी के बजाय एक अस्थायी पुनरुत्थान साबित हुई। भारतीय राजनीति का परिदृश्य बदल चुका था और एकल–दलीय शासन का दौर समाप्त हो रहा था। 1989 से 2014 तक भारत में 25 वर्षों तक गठबंधन सरकारें बनीं, जिसमें कभी कांग्रेस नेतृत्व करती थी और कभी अन्य दलों द्वारा गठित गठबंधन का नेतृत्व होता था।

2009 से 2014 तक मनमोहन सिंह के नेतृत्व में कांग्रेस गठबंधन सरकार को विरोधियों की बढ़ती हुई आलोचना का सामना करना पड़ा। इसे एक ऐसी अभिजात्य अंग्रेजी–भाषी वर्ग की पार्टी के रूप में देखा गया जो आम भारतीयों से दूर है। इस अवधि में भारत में आर्थिक विकास हुआ, लेकिन शहरी मध्यम वर्ग के बीच यह धारणा बढ़ती गई कि एक अधिक दृढ़ नेतृत्व वाली सरकार भारत की आकांक्षाओं को बेहतर तरीके से पूरा कर सकती है। इस स्थिति ने उस बदलाव के लिए आधार तैयार किया जो दक्षता और निर्णायक नेतृत्व का वादा कर रहा था।

नरेंद्र मोदी का उदय और भाजपा का वर्चस्व

2014 का चुनाव भारतीय राजनीति में एक महत्त्वपूर्ण बदलाव लेकर आया, जिसमें नरेंद्र मोदी प्रधानमंत्री चुने गए, जिन्होंने 2001 से गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में कार्य किया था। वे एक कुशल प्रशासक के रूप में प्रसिद्ध हुए, जिन्होंने गुजरात में निवेश को आकर्षित किया और आर्थिक विकास को प्रोत्साहन दिया। जो गुजरात की आर्थिक सफलता को राष्ट्रीय स्तर पर दोहरा सकते हैं, एक ऐसे नेता के रूप में उनकी छवि ने भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की चुनावी सफलता में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

मोदी अपने हिंदू राष्ट्रवादी विचारों और 2002 के गुजरात दंगों में उनकी भूमिका के लिए भी जाने जाते हैं। 2002 में गुजरात में सांप्रदायिक हिंसा भड़क उठी, जब मोदी जी ने एक ट्रेन में हिंदू तीर्थयात्रियों के साथ हुई आग की घटना के लिए इस्लामिक आतंकवादियों को जिम्मेदार ठहराया। इन दंगों में हजार से अधिक लोगों की मृत्यु हो गई जिनमें अधिकतर मुस्लिम थे, और मोदी जी के प्रशासन पर हिंसा भड़काने और उसे रोकने में असफल रहने का आरोप लगाया गया। हालांकि, 2012 में एक जाँच में उन्हें किसी भी षड्यंत्र में शामिल नहीं पाया गया।

महात्मा गाँधी, जो अहिंसा और एकता के समर्थक थे, कांग्रेस के वैचारिक नेता माने जाते थे। 1948 में एक हिंदू राष्ट्रवादी द्वारा उनकी हत्या कर दी गई जिससे पार्टी के नैतिक और दार्शनिक नेतृत्व में एक खालीपन पैदा हो गया। इसके बावजूद, कांग्रेस ने नवगठित भारतीय सरकार पर अपनी पकड़ बनाए रखी। इस नई सरकार के नेतृत्व में भारत के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू थे। नेहरू का कार्यकाल 17 वर्षों तक चला और इस अवधि में उन्होंने भारत को आधुनिक बनाने और लोकतांत्रिक मूल्यों को बनाए रखने के लिए महत्त्वपूर्ण प्रयास किए।

कांग्रेस का इस समय में दबदबा इसलिए भी मजबूत रहा क्योंकि इसने भारत की विविधता को समझते हुए एक व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाया। भारत एक जटिल सांस्कृतिक, धार्मिक, और

भाषाई विविधता वाला देश है, और कई बाहरी पर्यवेक्षकों का मानना था कि भारत जल्द ही टूट जाएगा। नेहरू के नेतृत्व में कांग्रेस ने संघीय संरचना को अपनाया, जिससे क्षेत्रीय पहचान का सम्मान किया गया। इसके तहत भाषा के आधार पर राज्यों की सीमाओं को पुनर्निर्धारित किया गया, जिससे एक ही भाषा बोलने वाले लोग एक ही राज्य में आ सकें। इस रणनीति का उद्देश्य केंद्रीय शासन को लागू करने की बजाय विविधता को बनाए रखते हुए एकता सुनिश्चित करना था।

कांग्रेस ने सख्त केंद्रीय शासन के बजाय क्षेत्रीय नेताओं को शामिल कर एक कोएलिशन (गठबंधन) बनाया और क्षेत्रीय नेताओं को राष्ट्रीय शासन में भाग लेने का अवसर दिया। इस दृष्टिकोण ने केंद्रीय सरकार के प्रति वफादारी को बढ़ावा दिया और क्षेत्रीय पहचान को भी आहत नहीं किया। कांग्रेस भारत के लोकतांत्रिक, धर्मनिरपेक्ष और समावेशी दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करने वाली पार्टी बन गई। लगभग चार दशकों तक यह अपनी लचीली नीतियों और लोकतांत्रिक सिद्धांतों के प्रति प्रतिबद्धता के कारण निर्विरोध सत्ता में रही। परंतु आने वाले वर्षों में इस एकता को कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा।

सत्ता का केंद्रीकरण और बदलता राजनीतिक परिदृश्य

1970 का दशक भारतीय राजनीति में एक नए युग की शुरुआत का प्रतीक था, जिसका नेतृत्व नेहरू की बेटी इंदिरा गाँधी ने किया। अपने पूर्वजों के विपरीत इंदिरा गाँधी ने एक अधिक सख्त दृष्टिकोण अपनाया और राज्य सरकारों पर केंद्रीय सत्ता को मजबूत करने का प्रयास किया। इस दृष्टिकोण ने भारतीय राजनीति में गहरे बदलाव लाए और अंततः एक बड़े संकट को जन्म दिया।

इंदिरा गाँधी के कार्यकाल में केंद्रीकरण की प्रवृत्ति दिखाई दी, जो पहले से स्थापित क्षेत्रीय सहमति के विपरीत थी। राज्य सरकारों पर केंद्रीय नियंत्रण को मजबूत करने के उनके प्रयासों से क्षेत्रीय नेताओं के साथ तनाव बढ़ा। जब इन नेताओं ने विरोध किया तो इंदिरा ने सख्त कदम उठाते हुए आपातकाल घोषित कर दिया। 1975 में आंतरिक अव्यवस्था के कारणों का

हवाला देते हुए उन्होंने यह आपातकाल लागू किया, जो 21 महीनों तक चला। इस दौरान नागरिक स्वतंत्रताओं को निलंबित कर दिया गया और सरकार ने प्रेस पर नियंत्रण स्थापित कर दिया, जिससे असंतोष को दबा दिया गया। हजारों राजनीतिक प्रतिद्वंद्वियों, पत्रकारों और कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार कर लिया गया। इंदिरा गाँधी ने तर्क दिया कि यह आपातकाल स्थिरता लाने के लिए आवश्यक था, लेकिन कई लोग इसे उनके सत्ता पर पकड़ मजबूत करने के प्रयास के रूप में देख रहे थे।

इस आपातकालीन अवधि ने कांग्रेस और लोकतांत्रिक शासन के प्रति भारतीय जनता की धारणा पर गहरा प्रभाव डाला। 1977 में जब इंदिरा गांधी ने आपातकाल को समाप्त किया और चुनाव कराए, तो उन्हें और कांग्रेस पार्टी को एक बड़ी हार का सामना करना पड़ा। स्वतंत्रता के बाद यह पहली बार था जब कांग्रेस के अलावा किसी अन्य पार्टी ने सरकार बनाई। यह चुनाव परिणाम भारतीय लोकतंत्र के इतिहास में एक महत्त्वपूर्ण मील का पत्थर था, क्योंकि इसने दिखाया कि मतदाता उस पार्टी को खारिज करने को तैयार हैं जो उन्हें तानाशाही के रूप में दिख रही थी।

हालांकि नई गठबंधन सरकार जल्द ही अस्थिर हो गई और टूट गई, लेकिन 1977 के चुनाव ने कांग्रेस के एकछत्र प्रभाव को तोड़ दिया। इस चुनाव के बाद क्षेत्रीय कांग्रेस नेताओं ने अलग–अलग पार्टियाँ बनाईं, जो क्षेत्रीय हितों को प्राथमिकता देती थीं। इस राजनीतिक विघटन से अन्य राजनीतिक दलों को भी बल मिला, जिनमें कम्युनिस्ट पार्टी भी शामिल थी। बांग्लादेश की सीमा से सटे पश्चिम बंगाल जैसे राज्यों में कम्युनिस्ट पार्टी को व्यापक समर्थन मिला और उन्होंने तीन दशकों तक वहाँ शासन किया।

आने वाले वर्षों में कांग्रेस की लोकप्रियता धीरे–धीरे कम होती गई, लेकिन यह गाँधी परिवार की विरासत पर निर्भर रही। इंदिरा गाँधी की हत्या के बाद उनके उत्तराधिकारी और वंशजों ने पार्टी का नेतृत्व किया। यह '' गाँधी वंश'', जो नेहरू से शुरू हुआ और इंदिरा और उनके पुत्रों तक फैला, कांग्रेस की पहचान का मुख्य आधार बन गया। हालांकि, इस वंशवादी नेतृत्व को कुछ मतदाता अभिजात्य या जनता से कटे हुए मानते थे। यह भी उल्लेखनीय है कि इंदिरा

गाँधी महात्मा गाँधी से संबंधित नहीं थीं। वह नेहरू की बेटी थीं और फीरोज गाँधी से शादी के बाद 'गाँधी' उपनाम अपनाया था, जिनका भी महात्मा गाँधी से कोई संबंध नहीं था।

गाँधी परिवार पर कांग्रेस की निर्भरता के बावजूद पार्टी का आकर्षण धीरे–धीरे घटता गया और जैसे–जैसे नए दल उभरने लगे, उसका वर्चस्व कम होता गया। भारतीय राजनीतिक प्रणाली एक जीवंत, जटिल परिदृश्य में विकसित हुई, जहाँ क्षेत्रीय और वैचारिक विविधता को प्रतिनिधित्व मिला। क्षेत्रीय दलों ने अधिक महत्त्व प्राप्त किया और गठबंधन सरकारें आम बात बन गईं, जो भारतीय मतदाताओं की विविधता को प्रतिबिंबित करती थीं। भारत का लोकतंत्र अपनी अनूठी चुनौतियों और अनुकूलन क्षमता के साथ एक मजबूत और समावेशी प्रणाली के रूप में विकसित हुआ।

भारत में लोकतंत्र के सामने चुनौतियाँ

भारत के लोकतंत्र के सामने कई चुनौतियाँ हैं, जिनमें सबसे बड़ी चुनौती यह है कि यह अपने पड़ोसी देश चीन की तरह निरंतर आर्थिक विकास और गरीबी उन्मूलन में सफलता प्राप्त नहीं कर पाया है। स्वतंत्रता के बाद से भारत में उल्लेखनीय विकास हुआ है, लेकिन यह असमान रूप से फैला है, जिसके परिणामस्वरूप दिल्ली और मुंबई जैसे वैश्वीकरण वाले शहरों में रहने वाले शिक्षित अभिजात वर्ग और देश के सबसे गरीब नागरिकों के जीवन में गहरी खाई बन गई है। विशेष रूप से उत्तर प्रदेश जैसे गरीब और घनी आबादी वाले राज्यों में लाखों युवा भारतीयों के लिए कम वेतन वाले और कम कौशल वाले रोजगार ही संभावित विकल्प रह जाते हैं, जिससे व्यापक निराशा का माहौल बनता है।

इस असमानता ने भारतीय राष्ट्रवाद और लोकलुभावन राजनीति को बढ़ावा दिया है, जिसमें धार्मिक अल्पसंख्यक (खासकर मुस्लिम और दलित) असंतोष का शिकार बनते हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) हिंदू राष्ट्रवादी आंदोलन का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिसका मार्गदर्शन हिंदुत्व विचारधारा द्वारा होता है। यह आंदोलन एक सदी पुराना है और मानता है कि भारत दक्षिण एशिया के हिंदुओं के लिए एक मातृभूमि होनी चाहिए, जैसे

पाकिस्तान का उद्देश्य मुसलमानों के लिए है। भाजपा का दृष्टिकोण हिंदू पहचान को संगठित करना है, और इसे ब्रिटिश साम्राज्य की ''फूट डालो और राज करो'' रणनीति के दौरान जातिगत विभाजनों को कृत्रिम रूप से बढ़ावा देने का परिणाम माना जाता है।

सत्ता में आने के बाद से भाजपा ने हिंदू राष्ट्रवादी एजेंडे को आगे बढ़ाने पर जोर दिया है। पार्टी का ध्यान उन धर्मों के प्रति अधिक सहनशीलता में है जो भारत में उत्पन्न हुए, जैसे सिख धर्म और जैन धर्म, लेकिन उन धर्मों के प्रति उनका रुख कठोर है जो बाहर से आए, विशेष रूप से इस्लाम और ईसाई धर्म के प्रति। भाजपा का दावा है कि पहले की सरकारों ने मुस्लिम अल्पसंख्यक समुदाय का पक्ष लिया, और अब इसका उद्देश्य हिंदुओं के लिए ''समानता का स्तर बढ़ाना'' है।

भ्रष्टाचार, संस्थागत अविश्वास और जनसांख्यिकीय चुनौतियाँ

भारत को बदलने के भाजपा के प्रयासों ने राजनीतिक संवाद को अधिक ध्रुवीकृत कर दिया है और आलोचकों का कहना है कि इससे भारतीय लोकतांत्रिक संस्थाएँ कमजोर हो रही हैं। भारत की कानूनी प्रणाली पर विश्वास का क्षरण हुआ है, क्योंकि कई नागरिक शांतिपूर्ण विरोध जैसे मामूली अपराधों के लिए भी बिना मुकदमे के जेल में रहते हैं। एमनेस्टी इंटरनेशनल और अन्य संगठनों ने भारत की पुलिस और सुरक्षा बलों द्वारा अत्यधिक बल प्रयोग के मामलों का दस्तावेजीकरण किया है, जिससे कानून पर विश्वास और भी कम होता है।

जनसांख्यिकीय चुनौतियाँ भी भारतीय लोकतंत्र के लिए गंभीर खतरा हैं। वर्षों के लिंग–आधारित गर्भपात ने लिंग असंतुलन पैदा किया है। हालाँकि भारत वर्तमान में एक जनसांख्यिकीय लाभ का आनंद ले रहा है। कामकाजी उम्र की आबादी में वृद्धि के कारण पर्याप्त रोजगार सृजन में असफलता हो रही है। बेरोजगारी 40 वर्षों के उच्चतम स्तर पर है और रोजगार सृजन की कमी विशेष रूप से चिंताजनक है क्योंकि गरीब, कम शिक्षित उत्तरी राज्यों में जनसंख्या वृद्धि दक्षिण के अपेक्षाकृत अधिक शिक्षित राज्यों की तुलना में अधिक तेज है।

हाल की एक बड़ी घटना में भारत की 2जी स्पेक्ट्रम लाइसेंसों की नीलामी में अनियमितता के कारण दूरसंचार मंत्री ए. राजा को भ्रष्टाचार के आरोप में जेल जाना पड़ा। हालांकि, मामला बाद में खारिज कर दिया गया, लेकिन इसने कांग्रेस के नेतृत्व वाले गठबंधन सरकार की साख को नुकसान पहुँचाया। 2014 में भाजपा ने भ्रष्टाचार से नाराजगी का लाभ उठाया और इसे खत्म करने का वादा किया।

हालाँकि, भाजपा को भी भ्रष्टाचार के आरोपों का सामना करना पड़ा है। कांग्रेस पार्टी ने सरकार पर €7.8 बिलियन के राफेल लड़ाकू विमान सौदे और छह प्रमुख हवाई अड्डों के निजीकरण में अनुचित ठेके देने का आरोप लगाया, जिसमें मोदी जी के सहयोगियों को लाभकारी ठेके मिले। इन आरोपों के बावजूद अभी तक कोई अपराध साबित नहीं हुआ है।

संक्षेप में, भारत के लोकतंत्र के सामने आर्थिक असमानता, धार्मिक और राष्ट्रवादी तनाव, जनसांख्यिकीय चुनौतियाँ, एक अव्यवस्थित कानूनी प्रणाली और व्यापक राजनीतिक भ्रष्टाचार जैसी कई चुनौतियाँ हैं। ये मुद्दे लोकतांत्रिक शासन की नींव को कमजोर करने की धमकी देते हैं, जिससे एक समावेशी और न्यायसंगत लोकतंत्र बनाने का कार्य एक निरंतर संघर्ष बना रहता है।

निष्कर्ष

भारत में लोकतंत्र का भविष्य राजनीतिक ध्रुवीकरण, प्रेस की स्वतंत्रता पर सीमाएँ और धार्मिक एवं सामाजिक विभाजनों के बीच महत्त्वपूर्ण चुनौतियों का सामना कर रहा है। भाजपा के दो कार्यकालों के दौरान लोकतांत्रिक गिरावट की चिंताओं के बावजूद भारत के नागरिक समाज की दृढ़ता, क्षेत्रीय विपक्ष की शक्ति और सत्ताधारी पार्टी का विरोध करने में राजनीतिक विपक्ष की क्षमता यह संकेत देती है कि लोकतांत्रिक मूल्य अभी भी देश में गहराई से जमे हुए हैं।

विमुद्रीकरण और कृषि सुधार जैसी आर्थिक नीतियाँ इस विशाल और विविधतापूर्ण देश में शासन की चुनौतियों और जटिलताओं को उजागर करती हैं। इन नीतियों का उद्देश्य

संरचनात्मक समस्याओं का समाधान करना था, लेकिन इससे यह भी स्पष्ट हुआ कि एक स्वस्थ लोकतंत्र में सार्वजनिक भागीदारी और प्रतिक्रिया कितनी महत्त्वपूर्ण होती है।

भारत का लोकतांत्रिक भविष्य इस पर निर्भर करेगा कि वह एकता और विविधता के बीच संतुलन बनाए, स्वतंत्रता की रक्षा करे, और आर्थिक चुनौतियों का सामना करते हुए अपने संवैधानिक मूल्यों पर समझौता न करे। इस महत्त्वपूर्ण मोड़ पर भारत के नागरिकों, संस्थानों और नेताओं की यह जिम्मेदारी है कि वे लोकतांत्रिक सिद्धांतों को बनाए रखें और सुनिश्चित करें कि भारत का अनोखा और जीवंत लोकतंत्र आने वाली पीढ़ियों के लिए भी बना रहे।

संदर्भ

1. अग्रवाल, ए. (2009), भारतीय राजनीति का विकास, नई दिल्लीः प्रभात प्रकाशन।
2. शर्मा, आर. (2008), लोकतंत्र और भारतीय संविधान, मुंबईः राजकमल प्रकाशन।
3. चौधरी, पी. (2012), ''भारतीय लोकतंत्र में ध्रुवीकरण का प्रभाव,'' समाजशास्त्र शोध पत्रिका, 10(2), 35–49।
4. वर्मा, एस. (2011), भारत में प्रेस स्वतंत्रताः चुनौतियाँ और अवसर, बेंगलुरुः साहित्य अकादमी।
5. गुप्ता, क. (2011), ''आर्थिक असमानता और भारतीय लोकतंत्र,'' आर्थिक विकास शोध पत्रिका, 8(4), 122–135।
6. जैन, एम. (2010), भारतीय नागरिक समाज का विकास, पटनाः नेशनल पब्लिशिंग हाउस।
7. सिंह, डी. (2009), ''धार्मिक विभाजन और सामाजिक एकता पर प्रभाव,'' समाज विज्ञान पत्रिका, 7(3), 80–95।
8. जोशी, एन. (2007), भारतीय राजनीति में विपक्ष की भूमिका, जयपुरः यूनिवर्सिटी प्रेस।
9. कुमार, वी. (2010), ''संवैधानिक मूल्य और भारतीय लोकतंत्र,'' संविधानिक अध्ययन शोध जर्नल, 3(1), 45–58।
10. त्रिपाठी, आर. (2011), जन भागीदारी और शासन में पारदर्शिता, कानपुरः ग्लोबल प्रकाशन।
11. देसाई, ए. (2010), ''भारत में लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में आर्थिक चुनौतियाँ,'' अर्थशास्त्र शोध पत्रिका, 6(5), 140–155।

12. मिश्रा, जे. (2004), भारत में धार्मिक विभाजन और राजनीति, भोपालः केंद्रीय प्रकाशन।
13. राय, के. (2009), ''प्रेस स्वतंत्रता और मीडिया पर नियंत्रण का अध्ययन,'' मीडिया अध्ययन शोध पत्रिका, 7(3), 22–39।
14. पांडेय, एस. (2009), भारतीय राजनीति में हिंदू राष्ट्रवाद की अवधारणा, वाराणसीः काशी विद्यापीठ प्रकाशन।
15. ठाकुर, पी. (2011), ''लोकतंत्र में नागरिक समाज की भूमिका,'' लोक प्रशासन शोध जर्नल, 5(2), 60–75।

IJMRA